वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:5 अंक: 252 शनिवार 31 जनवरी 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने विधानसभा में कहा

विद्यालयों के जर्जर भवनों की चरणबद्ध होगी मरम्मत

नए भवनों के निर्माण, मरम्मत और अंतिम उपयोग तिथि की जाएगी निर्धारित

जयपुर. कासं

शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने शुक्रवार को विधानसभा में कहा कि राज्य सरकार विद्यालयों के जर्जर भवनों की मरम्मत चरणबद्ध रूप से कराएगी। साथ ही, भविष्य में विद्यालयों के नए भवनों के निर्माण कार्यों में उनकी निर्माण तिथि, मरम्मत तिथि एवं अंतिम उपयोग तिथि भी निर्धारित की जाएगी। इससे भवनों की समयबद्ध निगरानी सम्भव हो सकेगी और सुरक्षा की दृष्टि से आवश्यकता पड़ने पर समय रहते ही उन्हें जमींदोज किया जा सकेगा। दिलावर ने कहा कि पूर्ववर्ती सरकार की ओर से विद्यालय भवनों के निर्माण एवं मरम्मत की गुणवत्ता के संबंध में कोई ठोस एवं सकारात्मक कार्य नहीं किया गया। उन्होंने सदन को आश्वस्त किया कि वर्तमान सरकार में पूर्ण जिम्मेदारी से कार्य होंगे। शिक्षा मंत्री ने कहा कि वर्तमान में 30 लाख रुपए से अधिक लागत वाले भवनों का सार्वजनिक निर्माण विभाग के माध्यम से थर्ड पार्टी ऑडिट कराई जाती है। इससे कम लागत वाले भवनों की थर्ड पार्टी ऑडिट नहीं हो पाती। इस व्यवस्था में सुधार करते हुए राज्य सरकार ने अहम निर्णय लिया है कि अब आईटीआई एवं पॉलिटेक्निक कॉलेजों के माध्यम से विद्यालय भवनों की थर्ड पार्टी ऑडिट कराई जाएगी। इससे निर्माण कार्य की गुणवत्ता की निष्पक्ष एवं तकनीकी जांच सुनिश्चित हो सकेगी। दिलावर ने जानकारी दी कि मरम्मत से बचे विद्यालय भवनों के संबंध में परियोजना अनुमोदन बोर्ड (पीएबी) को प्रस्ताव भेजा गया है, जिस पर केंद्र सरकार द्वारा 1 हजार करोड़ रुपए की राशि उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया गया है। इस राशि से राज्य सरकार द्वारा विद्यालय भवनों की मरम्मत कराई जाएगी।

भवनों में उचित ढलान सुनिश्चित की जाएगी

दिलावर ने बताया कि भवनों को सीलन से सुरक्षित रखने के लिए वाटर प्रूफिंग कार्य, छतों की नियमित सफाई तथा भविष्य में निर्मित होने वाले भवनों में उचित ढलान सुनिश्चित की जाएगी, जिससे जलभराव की समस्या न हो। शिक्षा मंत्री प्रश्नकाल के दौरान सदस्य संदीप शर्मा द्वारा पूछे गए पूरक प्रश्नों का उत्तर दे रहे थे। उन्होंने बताया कि विद्यालय प्रबंधन समिति द्वारा भवन के जर्जर होने की जानकारी सीबीईओ से डीईओ को भेजी जाती है। इसके बाद डीईओ एवं अन्य सदस्यों की समिति द्वारा विद्यालय का निरीक्षण कर भवन को जर्जर घोषित किया जाता है। जर्जर घोषित होने के बाद अधिकतम एक माह के भीतर भवन को जमींदोज करने की प्रक्रिया निर्धारित की जाती है।

3 हजार 768 स्कूल भवन जर्जर स्थिति में

इससे पहले विधायक के मूल प्रश्न के लिखित जवाब में शिक्षा मंत्री ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा अगस्त, 2025 में सभी विद्यालयों के भवनों का सर्वे करवाया गया था। जिला कलक्टर के माध्यम से गठित तकनीकी दल के सर्वे अनुसार 3 हजार 768 स्कूल भवन जर्जर स्थिति में है, जिसका जिलेवार विवरण सदन के पटल पर रखा। इन चिन्हित में से 2 हजार 558 को जर्जर घोषित किया जा चुका है। शेष 1 हजार 210 भवनों को भी जर्जर घोषित किया जाना है। इन विद्यालयों को जमीदोज की कार्यवाही प्रक्रियाधीन है। जिसका विवरण उन्होंने सदन के पटल पर रखा। दिलावर ने जानकारी दी कि इस सर्वे के अनुसार 45 हजार 365 राजकीय विद्यालयों में से 41 हजार 178 विद्यालयों में वृहद मरम्मत की आवश्यकता है, जिसका जिलेवार विवरण उन्होंने सदन के पटल पर रखा।

मां के पार्थिव देह को चिकित्सा शिक्षा के लिए किया समर्पित

जयपुर. कासं

मानवता और चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत करते हुए जयपुर के सोडाला निवासी सुधीर विश्वनाथन एवं उनकी बहन डॉ. सुजाता ने अपनी मां सोसम्मा विश्वनाथन की देह मरणोपरांत सवाई मानसिंह चिकित्सालय, जयपुर को दान की है। यह देहदान भावी चिकित्सकों के प्रशिक्षण, शोध एवं चिकित्सा शिक्षा को सशक्त बनाने में सहायक सिद्ध होगा। चिकित्सा शिक्षा आयुक्त नरेश गोयल के मार्गदर्शन एवं सक्रिय सहयोग से देहदान की समस्त प्रक्रिया गरिमापूर्ण, सुव्यवस्थित एवं नियमों के अनुरूप पूर्ण की गई। गोयल ने विश्वनाथन परिवार को इस पुनीत कार्य के लिए प्रेरित किया। पार्थिव देह को लाने के लिए सवाई मानसिंह अस्पताल ने पुष्पों से सुसज्जित वाहन भिजवाया और पूरे सम्मान के साथ देह को लाया गया। सवाई मानसिंह अस्पताल में दिवंगत आत्मा की स्मृति में पौधरोपण किया गया। सवाई मानसिंह अस्पताल प्रशासन ने देहदान करने वाले परिजनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा कि यह योगदान चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में अमूल्य धरोहर के रूप में सदैव स्मरणीय रहेगा।

मुख्यमंत्री भजनलाल ने महात्मा गांधी जी की प्रतिमा पर श्रद्धासुमन किए अर्पित

जयपुर. कासं

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि (शहीद दिवस) पर शुक्रवार प्रातः शासन सचिवालय पहुंचे। शर्मा ने सचिवालय स्थित महात्मा गांधी जी की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया। मुख्यमंत्री ने दो मिनट का मौन रखकर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं शहीदों को श्रद्धांजलि दी। उन्होंने उपस्थित जनसमूह के साथ गांधीजी की प्रतिमा के समक्ष बैठकर वैष्णव जन तो तेने कहिये, रघुपति राघव राजा राम, राम रतन धन पायो, राम जय राम जैसे गांधी जी के प्रिय भजनों का श्रवण किया। इस दौरान पशुपालन एवं देवस्थान मंत्री जोराराम कुमावत, मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास, विभिन्न विभागों के अतिरिक्त मुख्य सचिव, प्रमुख शासन सचिव, शासन सचिव, सचिवालय कर्मचारी संघ के पदाधिकारी एवं अधिकारी-कर्मचारियों ने भी मौन रखकर बापू को श्रद्धांजलि अर्पित की। इससे पहले मुख्यमंत्री ने शहीद दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री निवास पर महात्मा गांधी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया। इस दौरान मुख्यमंत्री कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

दिगंबर जैन सोशल ग्रुप ने सिनेमा के माध्यम से जगाई राष्ट्रभक्ति की अलख

जयपुर. शाबाश इंडिया। दिगंबर जैन सोशल ग्रुप के लगभग 70 सदस्यों ने ऐतिहासिक राजमंदिर सिनेमा हॉल में सामूहिक रूप से फिल्म 'बॉर्डर 2' देखकर देशप्रेम की एक अनूठी मिसाल पेश की। फिल्म के दौरान और समापन पर पूरा हॉल 'वंदे मातरम्', भारत माता की जय और जय हिंद के गगनभेदी नारों से गुंजायमान रहा। ग्रुप की अध्यक्ष श्रीमती शकुंतला बिंदायका के सौजन्य से आयोजित इस विशेष स्क्रीनिंग का उद्देश्य सदस्यों में राष्ट्रवाद की भावना को सुदृढ़ करना था। सभी सदस्यों ने इस सराहनीय पहल के लिए अध्यक्ष का आभार व्यक्त किया। सिनेमा हॉल के भीतर ही सदस्यों ने देशभक्ति के गीतों पर नृत्य और गान कर अपनी खुशियों का इजहार किया, जिससे वातावरण पूरी तरह राष्ट्रप्रेम के रंग में रंग गया। कार्यक्रम के पश्चात श्रीमती सुनीता गंगवाल ने अपने पुत्र बॉबी जैन के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सभी सदस्यों के लिए सुरुचिपूर्ण अल्पाहार की व्यवस्था की। ग्रुप की कोषाध्यक्ष श्रीमती उर्मिला जी ने बताया कि इस आयोजन ने न केवल मनोरंजन किया, बल्कि सामाजिक एकजुटता और देशभक्ति के संदेश को भी जन-जन तक पहुँचाया।

जयपुर में 'राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार-2026' का भव्य आयोजनः डॉ. अखिल बंसल सहित कई विभूतियाँ सम्मानित

जयपुर. शाबाश इंडिया

देशभर में सामाजिक सेवा और उत्कृष्ट योगदान को सम्मानित करने वाला प्रतिष्ठित ''राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार 2026'' गणतंत्र दिवस के अवसर पर राजस्थान अंतर्राष्ट्रीय केंद्र, जयपुर में अत्यंत भव्य एवं गरिमामय रूप में आयोजित किया गया। इस राष्ट्रीय स्तर के सम्मान समारोह में देश के विभिन्न राज्यों से चयनित उन विशिष्ट व्यक्तित्वों को सम्मानित किया गया, जिन्होंने शिक्षा, समाज सेवा, स्वास्थ्य, प्रशासन, कला, संस्कृति, नवाचार, राष्ट्र निर्माण और संचार माध्यमों (मीडिया) के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किए हैं।

आयोजन का उद्देश्यः सकारात्मक सोच और सेवा को प्रोत्साहन आयोजक संस्था के अध्यक्ष श्री कमल चौधरी ने जानकारी देते हुए बताया कि राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार का उद्देश्य उन कर्मठ नागरिकों को सम्मान देना है, जो अपने कार्यों से समाज और देश के लिए प्रेरणा का स्रोत बने हैं। यह मंच केवल सम्मान का नहीं, बल्कि सकारात्मक सोच, सेवा और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व की भावना को सशक्त करने का माध्यम है। विशिष्ट अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति संस्था के प्रचार प्रभारी डॉ. अखिल बंसल के अनुसार, कार्यक्रम में न्यायमूर्ति एन. के. जैन, भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी अनिल जैन, समूह कप्तान (सेवानिवृत्त) आर. सी. त्रिपाठी, सेवानिवृत्त कप्तान सुखराम यादव, मुख्य निरीक्षक हरेंद्र सिंह (राजस्थान पुलिस), उप कर्नल शीतलकृष्ण गायकवाड़, सेवानिवृत्त सैन्य अधिकारी सी. के. सक्सेना, मुकेश कुमार और बलवीर सिंह की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज सम्मान, सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ और भव्य मंच व्यवस्था की गई। सम्मानित प्रतिभागियों को अतिथियों द्वारा प्रशंसा पत्र, स्मृति चिह्न, राष्ट्रीय पदक एवं आधिकारिक पहचान पत्र प्रदान किए गए। पिछले वर्षों की सफलता के बाद इस वर्ष कार्यक्रम का स्वरूप और भी व्यापक एवं प्रभावशाली बनाया गया, जिससे राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक और रचनात्मक कार्यों को नई पहचान मिल सके। यह आयोजन देशभक्ति, एकता और सामाजिक चेतना के संदेश को और अधिक मजबूत करता है। संस्था ने घोषणा की है कि अगला समारोह इसी भव्यता के साथ 15 अगस्त 2026 को दिल्ली में आयोजित होगा।

पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रमुख व्यक्तित्वः राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार प्राप्त करने वालों में प्रमुख रूप से डॉ. अखिल बंसल (जयपुर), सुरेंद्र पाण्ड्या (जयपुर), शैलेंद्र जैन (अलीगढ़), डॉ. राजीव जैन (आगरा), डॉ. राजीव प्रचण्डिया (अलीगढ़), सुरेंद्र मिश्रा (भोपाल), अजित बंसल (जयपुर), पारस जैन 'पार्श्वमणि' (कोटा), मयंक जैन (अलीगढ़), डॉ. रीना सिन्हा (मुंबई) तथा डॉ. मीना जैन (उदयपुर) सम्मिलित थे।

सेहत

पान मसालाः एक मीठा जहर

आजकल पान की दुकानों, किराना स्टोर्स और चाय के स्टालों पर तोरणों की तरह टंगे पान मसालों के रंग-बिरंगे पाउच सहज ही आकर्षित करते हैं। दुकानदार इन्हें बड़े यत्न से सजाते हैं ताकि किशोरों और युवाओं को लुभा सकें। अक्सर लोग दोस्तों के दबाव या 'माउथ फ्रेशनर' समझकर इनका सेवन शुरू करते हैं, लेकिन धीरे-धीरे यह शौक एक घातक लत में बदल जाता है। पान मसाले का इतिहास बहुत पुराना नहीं है, लेकिन आकर्षक विज्ञापनों और सोचे-समझे प्रचार ने इसे घर-घर पहुंचा दिया है। कानपुर से शुरू हुआ यह सफर आज अरबों के टर्नओवर तक पहुंच चुका है। हर ब्रांड एक नए स्वाद और जायके का वादा करता है, जिसके जाल में फंसकर आज करोड़ों लोग इसका सेवन कर रहे हैं। शादी-ब्याह हो, राजनीतिक मंच हो या साहित्यिक गोष्ठी, पान मसाले की मौजूदगी हर जगह 'स्टेटस सिंबल' बन गई है। अक्सर युवा यह सोचकर पान मसाला खाते हैं कि इसमें तंबाकू नहीं है, इसलिए यह नुकसानदेह नहीं होगा। यह एक बड़ी गलतफहमी है। पान मसाला में सुपारी, कत्था, चूना, सिंथेटिक मेंथोल और कई ऐसे गुप्त घटक मिलाए जाते हैं जो नशे की लत पैदा करते हैं। शोध बताते हैं कि यह मिश्रण बिना तंबाकू के भी उतना ही खतरनाक है जितना सिगरेट। यह न केवल पाचन बिगाड़ता है, बल्कि रक्तचाप और हृदय रोगों का कारण भी बनता है। चिकित्सकीय शोधों (जैसे पटना मेडिकल कॉलेज के अध्ययन) के अनुसार, भारत में 35% कैंसर रोगी मुख, गले या जीभ के कैंसर से ग्रस्त हैं। इनमें महिलाओं की संख्या भी बढ़ रही है। पान मसाला चबाने से 'ओरल सबम्यूकस फाइब्रोसिस' नामक रोग होता है, जिससे जबड़ा खुलना कम हो जाता है। यही स्थिति आगे चलकर कैंसर का रूप ले लेती है। तंबाकू युक्त उत्पादों का सेवन करने से मुख कैंसर, हृदय रोग और तपेदिक जैसी बीमारियां जन्म लेती हैं। आंकड़ों के अनुसार, भारत में 50% पुरुष और 10% महिलाएं किसी न किसी रूप में तंबाकू या पान मसाले का सेवन करते हैं, जिनमें 20 से 25 वर्ष के युवाओं की संख्या सबसे अधिक है। पान मसाले में स्वाद बढ़ाने के लिए निर्धारित मात्रा से 15 गुना अधिक मेंथोल मिलाया जाता है।

संपादकीय

विकसित भारत की ओर बढ़ते कदम

भारत की आर्थिक विकास यात्रा संघर्ष और सफलता का एक जीवंत उदाहरण है। निम्न आय श्रेणी से निकलकर विकसित राष्ट्र बनने तक का सफर अब अपनी निर्णायक अवस्था में पहुंच चुका है। वर्ष 2007 में भारत को निम्न मध्यम आय श्रेणी में शामिल होने में 60 वर्ष लगे थे, लेकिन उसके बाद की गति आश्चर्यजनक रही है। वर्ष 1962 में भारत की प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय मात्र 90 अमेरिकी डॉलर थी, जो 2007 में बढ़कर 910 डॉलर हुई। इसी प्रकार, देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) को 1 लाख करोड़ डॉलर तक पहुंचने में 60 वर्ष लगे, किंतु अगला 1 लाख करोड़ केवल 7 वर्षों (2014) में जुड़ गया। वर्तमान गति का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि वर्ष 2025 में भारतीय अर्थव्यवस्था 4 लाख करोड़ डॉलर के स्तर को पार कर चुकी है और अगले 2-3 वर्षों में इसके 5 लाख करोड़ डॉलर तक पहुंचने की प्रबल संभावना है। प्रति व्यक्ति आय के मोर्चे पर भी भारत ने लंबी दूरी तय की है। वर्ष 2019 में यह 2,000 डॉलर थी, जिसके 2026 तक 3,000 डॉलर और 2030 तक 4,000 डॉलर होने का अनुमान है। यदि यह गति बनी रही, तो 2030 तक भारत 'उच्च मध्यम आय' श्रेणी में शामिल हो जाएगा, जहां आज चीन और इंडोनेशिया जैसे देश खड़े हैं। किसी भी राष्ट्र को 'विकसित' कहलाने के लिए प्रति व्यक्ति आय का 13,926 डॉलर (वर्तमान परिभाषा) होना अनिवार्य है। भारत ने वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने का लक्ष्य रखा है। इसके लिए हमें आगामी 23 वर्षों में लगभग 8.9 प्रतिशत की संयुक्त वृद्धि दर की आवश्यकता होगी। यह लक्ष्य कठिन अवश्य है, पर असंभव नहीं; क्योंकि 2001 से 2024 के बीच भारत की औसत वृद्धि दर 8.3 प्रतिशत रही है। वैश्विक स्तर पर 139 विकासशील देशों में से केवल 6 देश ही भारत से तेज बढ़ रहे हैं, लेकिन बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में भारत आज भी शीर्ष पर है। चीन और गयाना जैसे देशों के उदाहरण सिद्ध करते हैं कि सही नीतियों और गति से आय की श्रेणियों को तेजी से पार किया जा सकता है। आर्थिक प्रगति केवल सरकारी आंकड़ों से नहीं, बल्कि सामाजिक सहभागिता से संभव है। वर्ष 1990 में विश्व में 14वें स्थान पर रहने वाला भारत आज चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और शीघ्र ही तीसरी शक्ति बनने जा रहा है। इस विकास को स्थायी बनाने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा दिए गए 'पंच परिवर्तन' कार्यक्रम की महत्ता बढ़ जाती है। इसके पांच सूत्र स्वदेशी का भाव, नागरिक कर्तव्य व अनुशासन, सामाजिक समरसता, पर्यावरण का पोषण और कुटुंब प्रबोधन (संयुक्त परिवार व्यवस्था) भारत को आंतरिक रूप से सशक्त बनाएंगे। भारत का विकास अब केवल आर्थिक पैमानों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ता एक समग्र प्रयास है। यदि केंद्र और राज्य सरकारें मिलकर ऐसी नीतियां बनाएं जिनका लाभ अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति तक पहुंचे, तो 2047 तक 'उच्च आय श्रेणी' में शामिल होना और मां भारती को पुनः 'विश्व गुरु' के पद पर प्रतिष्ठित करना पूरी तरह संभव है।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

वन्यजीव संरक्षण की पुकार

सुनील कुमार महला

प्रतिवर्ष 31 जनवरी को 'अंतर्राष्ट्रीय जेब्रा दिवस' मनाया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य जेब्रा जैसे दुर्लभ, सुंदर और उपयोगी वन्यजीव के संरक्षण के प्रति वैश्विक जागरूकता बढ़ाना है। आज बढ़ते शहरीकरण, वनों की कटाई, अवैध शिकार और जलवायु परिवर्तन के कारण इनके प्राकृतिक आवास नष्ट हो रहे हैं, जिससे इनकी आबादी में तीव्र गिरावट आई है। जेब्रा केवल एक आकर्षक जीव नहीं, बल्कि पारिस्थितिकी तंत्र के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। इन्हें 'पारिस्थितिकी तंत्र का अभियंता' कहा जाता है। ये घास के मैदानों में सख्त और लंबी घास खाकर उसे छोटा करते हैं, जिससे अन्य शाकाहारी जीवों के लिए कोमल घास उग पाती है। सूखे के समय ये अपनी इंद्रियों से पानी के गुप्त स्रोत खोज लेते हैं, जिससे अन्य वन्यजीवों की भी प्यास बुझती है।

प्रकृति का वैज्ञानिक चमत्कार

जेब्रा का शरीर मूल रूप से काला होता है, जिस पर सफेद धारियां विकास के दौरान उभरती हैं। ये धारियां केवल सुंदरता के लिए नहीं हैं: **तापमान नियंत्रण:** काली धारियां गर्मी सोखती हैं और सफेद परावर्तित करती हैं, जिससे त्वचा पर हवा की सूक्ष्म लहरें शरीर को ठंडा रखती हैं। **प्राकृतिक सुरक्षा:** ये धारियां परजीवी मक्खियों की आंखों को भ्रमित कर देती हैं, जिससे वे जेब्रा पर बैठ नहीं पातीं। इसे 'गति भ्रम' कहते हैं। **पहचान का प्रतीक:** किसी भी दो जेब्रा की धारियां एक जैसी नहीं होतीं। यह इंसानों के उंगलियों के निशान की तरह अद्वितीय होती हैं।

स्वभाव और सामाजिक जीवन

जेब्रा अश्व वंश से संबंधित हैं, लेकिन इन्हें कभी पालतू नहीं बनाया जा सका। ये डरपोक होने के साथ-साथ अत्यंत आक्रामक भी होते हैं। इनकी लात इतनी शक्तिशाली होती है कि वह शेर का जबड़ा तोड़ सकती है। ये झुंड में रहना पसंद करते हैं। जेब्रा और शुतुरमुर्ग के बीच अनोखी मित्रता होती है शुतुरमुर्ग की दृष्टि और जेब्रा के सुनने की शक्ति मिलकर उन्हें शिकारियों से बचाती है।

प्रजातियां और जनसंख्या

जेब्रा की मुख्य रूप से तीन प्रजातियां पाई जाती हैं: **मैदानी जेब्रा:** यह सबसे आम प्रजाति है, जिनकी संख्या लगभग 5 लाख है। **पर्वतीय जेब्रा:** ये चट्टानी ढलानों पर चढ़ने में माहिर होते हैं। इनकी संख्या लगभग 35,000 है। **ग्रेवीज जेब्रा:** यह सबसे दुर्लभ और संकटग्रस्त प्रजाति है, जिसकी संख्या मात्र 2,500 से 2,800 के बीच सिमट गई है।

वर्ष 2026 की हालिया गणना के अनुसार, दुनिया में अब कुल 5.5 से 6 लाख जेब्रा ही बचे हैं। 'ग्रेवीज जेब्रा' को अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ ने गंभीर रूप से संकटग्रस्त सूची में शामिल किया है।

संरक्षण की आवश्यकता

जेब्रा की घटती संख्या पूरे पारिस्थितिकी तंत्र के असंतुलन का संकेत है। इनके कानों और पूंछ की भाषा, खड़े होकर सोने की अद्भुत क्षमता और जन्म के मात्र 20 मिनट बाद दौड़ने वाले शिशुओं की यह अनोखी दुनिया आज खतरे में है।

संतों के सानिध्य के बिना आत्मा का कल्याण संभव नहीं: आर्यिका विज्ञाश्री माताजी

नीमच. शाबाश इंडिया

मालवा की पावन धरा पर ऐतिहासिक पंचकल्याणक संपन्न कराने वाले आचार्य 108 विराग सागर जी महाराज की सुशिष्या, भारत गौरव आर्यिका रत्न 105 विज्ञाश्री माताजी का ससंघ नीमच में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। इस अवसर पर आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए माताजी ने कहा कि देव-गुरु-शास्त्र का सानिध्य ही मानव को आत्म-कल्याण का सच्चा मार्ग दिखाता है।

साधु संत और संसार: एक तुलना

माताजी ने बड़े ही मार्मिक ढंग से समझाया कि सांसारिक प्रवेश और संतों के प्रवेश में क्या अंतर है। उन्होंने कहा, विवाह के समय जब दूल्हा घर में प्रवेश करता है, तो वह मंगल प्रवेश नहीं कहलाता, लेकिन जब साधु-संतों का आगमन होता है, तो वह 'मंगल प्रवेश' है, क्योंकि वे दूसरों के कल्याण के लिए त्याग और संयम का मार्ग प्रशस्त करते हैं। उन्होंने संतों की तुलना बहते पानी से की, जो हमेशा निर्मल रहता है, जबकि संसारी व्यक्ति ठहरे हुए पानी के समान है।

सत्संग और संयम की महिमा

प्रवचन के दौरान माताजी ने जीवन में शुद्धता और पवित्रता के महत्व पर बल दिया। उनके संबोधन के मुख्य बिंदु रहे:

पाप कर्मों की निर्जरा: संतों के दर्शन मात्र से पाप कर्म कट जाते हैं। संतों की एक समय की संगति 14 जन्मों के और शुद्ध नवधा भक्ति 21 जन्मों के पापों का क्षय कर सकती है।

आहार और विचार: यदि मनुष्य शुद्ध और सात्विक भोजन ग्रहण करता है, तो उसके विचार भी पवित्र बनते हैं। उन्होंने जैन कुल में जन्म लेने वालों से जमीकंद का त्याग करने का आान किया।

मोबाइल से दूरी: उन्होंने कटाक्ष करते हुए कहा कि जितनी देर हम प्रवचन में बैठते हैं, उतनी देर मोबाइल से दूर रहकर हम मानसिक पापों से बच सकते हैं।

समाजजनों ने की प्रवास की विनती

दिगंबर जैन समाज नीमच के अध्यक्ष विजय जैन (जैन ब्रोकर्स) ने बताया कि आर्यिका माताजी ससंघ 'बही पार्श्वनाथ' से जयपुर की ओर विहार कर रही हैं। जयपुर जाते समय उन्होंने नीमच में प्रवास किया है। इस दौरान समाज के वरिष्ठ जनों और पदाधिकारियों ने माताजी से नीमच में अधिक समय तक प्रवास करने की सामूहिक विनती की। धर्मसभा में आर्यिका ज्ञेम्याश्री, ज्ञापकश्री, ज्ञेयश्री और छुल्लिका विज्ञप्ति श्री का भी सानिध्य प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संचालन अजय कासलीवाल ने किया। इस अवसर पर उपाध्यक्ष जयकुमार बज, चमेली शाह, आभा विनायका, मनोज विनायका, अनिल बज और भागचंद अजमेरा सहित बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित थे।

विशेष: रविवार सुबह 9 बजे दिगंबर जैन मांगलिक भवन में माताजी के प्रवचन पुनः आयोजित होंगे।

अतिशय क्षेत्र बरही वल्लभपुर में परम श्रद्धा, भक्ति एवं उल्लास के साथ भगवान श्री अजितनाथ के जन्म कल्याणक दिवस का भव्य आयोजन किया गया

भिंड. शाबाश इंडिया

प्रभु श्री अजितनाथ भगवान के जन्म कल्याणक के पावन अवसर पर अतिशय क्षेत्र बरही वल्लभपुर में परम श्रद्धा, भक्ति एवं उल्लास के साथ मूलनायक भगवान श्री अजितनाथ जी का स्वर्ण कलशों द्वारा भव्य मस्तकाभिषेक संपन्न हुआ। इसमें प्रथम शांतिधारा का सौभाग्य मूलचंद-राजकुमार जैन (घर गृहस्थी किराना परिवार) को प्राप्त हुआ। द्वितीय शांतिधारा अभिषेक का पुण्य अवसर चौ. अशोक कुमार एवं सुनील कुमार जैन के सुपुत्र चौ. एकांश जैन को प्राप्त हुआ। इसके पश्चात श्रद्धाभाव के साथ प्रभु श्री जी को पालना झुलाया गया एवं विधिपूर्वक श्री अजितनाथ विधान का शुभारंभ किया गया। अंत में समस्त समाजजनों ने प्रेमपूर्वक स्वल्पाहार ग्रहण किया। यह पावन अवसर सभी श्रद्धालुओं के लिए भक्ति, शांति एवं आध्यात्मिक आनंद से परिपूर्ण रहा। इस अवसर पर बरही मंदिर समिति के पूर्व अध्यक्ष अशोक कुमार जैन कक्का, पी.डी. जैन, वर्तमान अध्यक्ष चौ. अशोक कुमार जैन (पीपरी वाले), कोषाध्यक्ष सुरेश जैन (रंग वाले), महामंत्री पाड़े विजय कुमार जैन, मंत्री बल्लू, सनत कुमार जैन, तन्नू राकेश जैन (साइकिल), मीडिया प्रभारी मनोज जैन, निर्माण अध्यक्ष महावीर प्रसाद जैन, राकेश जैन (तेल वाले), ऋषि जैन (रानीपुरा), मोहित जैन (घर गृहस्थी किराना), पुजारी आनंद जैन, ज्ञानचंद जैन, शांतिलाल जैन (बरही), राजेन्द्र जैन (बरही), दिलीप जैन (डीडी), राजेन्द्र जैन (कल्लू दद्दा) सहित अन्य समाजजनों की गरिमामय उपस्थिति रही।

कड़ाके की ठंड में राहत: मूक-बधिर विद्यार्थियों को ऊनी वस्त्र भेंट किए

जयपुर. शाबाश इंडिया

दिगंबर जैन सोशल ग्रुप 'जयपुर मेन' द्वारा सामाजिक सेवा कार्यों के अंतर्गत एक सराहनीय पहल की गई। जवाहरलाल नेहरू मार्ग (पुलिस स्मारक के पास) स्थित सेठ आनंदीलाल पोद्दार राजकीय मूक-बधिर विद्यालय के कक्षा एक व दो के जरूरतमंद विद्यार्थियों को ऊनी वस्त्र, लेखन सामग्री और बिस्किट के पैकेट भेंट किए गए। यह सामग्री दिगंबर जैन सोशल ग्रुप की सदस्य श्रीमती आशा कासलीवाल ने अपने पति स्व. सुरेंद्र कुमार कासलीवाल की स्मृति में प्रदान की। उल्लेखनीय है कि ये सभी विद्यार्थी आर्थिक रूप से कमजोर पृष्ठभूमि से संबंधित हैं। विद्यालय परिसर में आयोजित इस गरिमामय कार्यक्रम में ग्रुप के अध्यक्ष धनु कुमार जैन, मंत्री हीरा चंद बैद, विनोद जैन, इंदु तोतूका, डॉ. णमोकार-पुष्पा जैन और मंजु पुरी छाबड़ा उपस्थित रहे। विद्यालय की ओर से प्राचार्य भरत जोशी एवं अन्य शिक्षकों ने इस मानवीय कार्य के लिए ग्रुप का आभार व्यक्त किया।

णमोकार तीर्थ पर उमड़ा श्रद्धा का सैलाब

1500 किमी की पदयात्रा कर पहुंचे आचार्य श्री कुंथूसागर जी के शिष्य

इस पावन अवसर पर राष्ट्रसंत आचार्य श्री देवनंदी जी महाराज, आचार्य श्री सूर्यसागर जी, आचार्य श्री पद्मनंदी जी, आचार्य श्री विद्यानंदी जी, आचार्य श्री कर्मविजयनंदी जी, आचार्य श्री कुमुदनंदी जी और युगल मुनि अमोघ कीर्ति व अमर कीर्ति जी महाराज सहित 100 से अधिक साधु-साध्वियों का मंगल सानिध्य प्राप्त हुआ...

औरंगाबाद/णमोकार तीर्थ. शाबाश इंडिया

णमोकार तीर्थ क्षेत्र में आयोजित होने वाले भव्य अंतरराष्ट्रीय पंचकल्याणक महोत्सव की पूर्व संध्या पर आज भक्ति और श्रद्धा का अद्भुत संगम देखने को मिला। राष्ट्रसंत आचार्य श्री कुंथूसागर जी महाराज के शिष्य, आचार्य श्री सूर्यसागर जी महाराज एवं उपाध्याय श्री विभंजन सागर जी महाराज ने कर्नाटक के वरुर से लगभग 1500 किलोमीटर की कठिन पदयात्रा पूर्ण कर ससंघ णमोकार तीर्थ में मंगल प्रवेश किया।

भव्य स्वागत और कलश यात्रा

महाराज श्री के आगमन पर समूचा क्षेत्र 'गुरुदेव' के जयकारों से गूंज उठा। सौभाग्यवती महिलाओं ने मंगल कलश धारण कर गुरुवर की भव्य अगवानी की। बाजे-गाजे के साथ निकाली गई शोभायात्रा में बड़ी संख्या में श्रद्धालु गुरु भक्ति में झूमते नजर आए। मंदिर परिसर में प्रवेश करते ही भक्तों ने मुनि संघ पर पुष्प वर्षा की और पाद प्रक्षालन का सौभाग्य प्राप्त किया। महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित 'गुरु मिलन' कार्यक्रम ने समूचे वातावरण को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया। इस पावन अवसर पर राष्ट्रसंत आचार्य श्री देवनंदी जी महाराज, आचार्य श्री सूर्यसागर जी, आचार्य श्री पद्मनंदी जी, आचार्य श्री विद्यानंदी जी, आचार्य श्री कर्मविजयनंदी जी, आचार्य श्री कुमुदनंदी जी और युगल मुनि अमोघ कीर्ति व अमर कीर्ति जी महाराज सहित 100 से अधिक साधु-साध्वियों का मंगल सानिध्य प्राप्त हुआ।

ऐतिहासिक होगा पंचकल्याणक महोत्सव

उपस्थित आचार्य संघ ने अपने मंगल प्रवचन में कहा कि यह अंतरराष्ट्रीय महोत्सव न केवल भव्य बल्कि ऐतिहासिक होना चाहिए। उन्होंने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि पंचकल्याणक जैसे आयोजन आत्मा के कल्याण और धर्म की प्रभावना का सशक्त माध्यम होते हैं। सभी आचार्यों ने इस महोत्सव को अनुशासित और गरिमापूर्ण तरीके से संपन्न करने का आशीर्वाद दिया। कार्यक्रम के दौरान बालब्रह्मचारी वैशाली दीदी और प्रतिष्ठाचार्य अक्षय भैया ने आचार्य श्री के स्वागत में उद्बोधन दिया। इस अवसर पर महोत्सव समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष संतोष पेंढारी, उपाध्यक्ष महावीर गंगवाल, सुमेर काले (अध्यक्ष, मांगीतुंगी ट्रस्ट), पवन पाटणी, अनिल जमगे, संतोष काला, विनोद शाह, प्रकाशचंद सेठी, चंद्रशेखर कासलीवाल और प्रचार-प्रसार संयोजक विनोद पाटणी सहित बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित थे। समिति के सदस्यों (नरेंद्र अजमेरा, पीयूष कासलीवाल) ने बताया कि आगामी अभिषेक, पूजन और अन्य धार्मिक अनुष्ठानों की तैयारियां अंतिम चरण में हैं।

विश्व कल्याण हेतु अशोक विहार में नवकुंडीय गायत्री यज्ञ संपन्न

जयपुर. शाबाश इंडिया। जय जंतु फाउंडेशन के एक वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में जय जंतु फाउंडेशन एवं गायत्री शक्तिपीठ, चोमू के तत्वावधान में अशोक विहार पार्क, चोमू में नवकुंडीय गायत्री यज्ञ का भव्य आयोजन किया गया। इस यज्ञ में अशोक विहार के समस्त निवासी एवं गायत्री परिजन बड़ी संख्या में शामिल हुए और विश्व कल्याण की कामना के साथ गायत्री मंत्र की आहुतियाँ प्रदान कीं। कार्यक्रम में पूर्व विधायक रामलाल शर्मा, चोमू थाना अधिकारी प्रदीप शर्मा, पूर्व पालिका अध्यक्ष आशीष दुसाद, गायत्री शक्तिपीठ के अध्यक्ष विनेश अग्रवाल, सांवरमल अग्रवाल (निवाना वाले), राजकुमार शर्मा, दिनेश खेमावाला, वैद्य बंशीधर शर्मा, रामधन टांक, उमराव यादव, सुरेश विजयवर्गीय, जितेंद्र बीजावत, रमेश राजपाल, नरेश अग्रवाल, अशोक विहार निवासी रामचंद्र अग्रवाल, दामोदर अग्रवाल, दामोदर रावत, गोविंद झालाणी, श्रवण कामदार, चिरंजी लाल माहेश्वरी, रामकृष्ण दुसाद, जितेंद्र शारदा सहित अनेक गणमान्यजन एवं महिला शक्ति—अनुराधा अग्रवाल, जानकी दुसाद एवं अनिता अग्रवाल—की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम के अंत में जय जंतु फाउंडेशन के सदस्य मेहुल अग्रवाल एवं उनकी टीम ने उपस्थित सभी अतिथियों एवं सहयोगियों का आभार व्यक्त किया।

रंगशाला प्रोडक्शन के बैनर तले बनी धार्मिक फिल्म

'महिमा स्वस्तिधाम की' आस्था का अतिशय का पोस्टर रिलीज

इंदौर (मध्यप्रदेश). शाबाश इंडिया

रंगशाला प्रोडक्शन, साधना मादावत जैन एवं स्वस्तिधाम तीर्थ क्षेत्र समिति के सहयोग से निर्मित धार्मिक फि ल्म महिमा स्वस्तिधाम की आस्था का अतिशय का पोस्टर राजस्थान के चन्द्रांचल तीर्थ, प्यावड़ी में पूज्य गुरुमां स्वस्तिभूषण जी माताजी के 30वें दीक्षा दिवस के पावन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में विधिवत रूप से जारी किया गया। यह फिल्म 20वें तीर्थंकर श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ भगवान के स्वस्तिधाम (जहाजपुर) में प्रकट होने से जुड़ी आस्था, श्रद्धा एवं चमत्कारी प्रसंगों के साथ-साथ पूज्य स्वस्तिभूषण माताजी के जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण एवं प्रेरणादायी प्रसंगों पर आधारित है। फिल्म का उद्देश्य जैन धर्म की आध्यात्मिक विरासत, तपस्या एवं आस्था को जन-जन तक पहुँचाना है। राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी पारस जैन पार्श्वमणि (पत्रकार) ने जानकारी देते हुए बताया कि फि ल्म की शूटिंग जहाजपुर सहित राजस्थान के कई प्रमुख शहरों में की गई है। फि ल्म का निर्देशन मुकेश दुबे ने किया है, सिनेमेटोग्राफी अनिकेत द्वारा की गई है तथा संपादन का दायित्व इलैशा जैन ने निभाया है। फिल्म में निकिता लविना, महावीर काला, हिमांशु, यथार्थ पाटनी, पारस जैन पार्श्वमणि, सुहानी मधु वेद, प्रकाश देशमुख एवं मनीष काला ने महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाई हैं। इस अवसर पर फि ल्म के निर्देशक मुकेश दुबे ने कहा, महिमा स्वस्तिधाम की केवल एक फि ल्म नहीं, बल्कि श्रद्धा और आस्था की भावनाओं को परदे पर उतारने का एक सच्चा प्रयास है। इस फि ल्म के माध्यम से हमने स्वस्तिधाम एवं पूज्य माताजी के जीवन मूल्यों को भावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने की कोशिश की है।

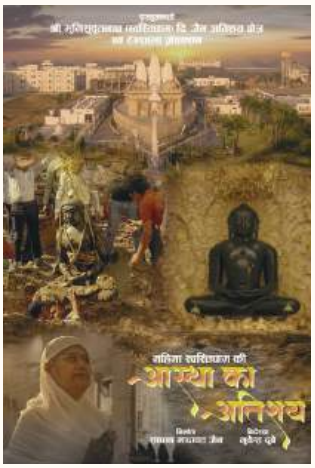

तीर्थराज सम्मेद शिखर की पावन पवित्रता को खतरा: मौन समाज और प्रशासन की चुनौती

पारस जैन 'पार्श्वमणि', पत्रकार, कोटा (राज.)

प्राचीन तीर्थ स्थल भारतीय संस्कृति की अनमोल धरोहर हैं, जिनकी रक्षा और सुरक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है। लेकिन वर्तमान समय की विडंबना देखिए कि तीर्थों पर पाप और अत्याचार भारी पड़ रहे हैं।

बीस तीर्थंकरों की मोक्ष स्थली: अनंत ऊर्जा का केंद्र

झारखंड के गिरिडीह जिले में स्थित तीर्थराज सम्मेद शिखरजी वह पावन भूमि है, जहाँ से २० तीर्थंकरों और करोड़ों मुनिराजों ने मोक्ष प्राप्त किया है। यह स्थान उन भव्य आत्माओं के तप, त्याग और साधना की धूल से पवित्र है जिन्होंने संसार के भोगों को त्यागकर परमात्मा का पद प्राप्त किया। तीर्थ का कण-कण पूजनीय और वंदनीय है।

पर्यटन बनाम तीर्थ: बढ़ता संकट

यह अत्यंत सोचनीय और गंभीर विषय है कि प्रतिवर्ष १४ व १५ फरवरी को लाखों की संख्या में लोग 'पर्यटन' के नाम पर पर्वत पर चढ़ाई करते हैं। इन दिनों जैन तीर्थयात्रियों को वंदना के लिए ऊपर जाने से रोका जाता है। विडंबना यह है कि इस दौरान पर्वत पर कचरा फैलाना, अभक्ष्य पदार्थों का सेवन और अपवित्रता की घटनाएं बढ़ जाती हैं। संपूर्ण भारत का जैन समाज इस

शर्मनाक और कलंकित करने वाली स्थिति का मूक दर्शक बना हुआ है।

प्रकृति और संस्कृति के साथ खिलवाड़

जब-जब मानव ने प्रकृति के आयामों के साथ खिलवाड़ किया है, तब-तब प्रकृति ने अपना विकराल रूप दिखाया है। वैश्विक महामारी हमें सादगी और प्रकृति के सम्मान का सबक सिखा चुकी है। हमें प्रकृति में 'विकृति' नहीं, बल्कि 'संस्कृति' का शंखनाद करना चाहिए। यदि हम अपने पूजनीय तीर्थों की पावनता नहीं बचा पाए, तो यह हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए सबसे बड़ा नुकसान होगा।

समय की पुकार: ठोस कदम उठाने की आवश्यकता

आज आवश्यकता है कि हम केवल चर्चा न करें, बल्कि धरातल पर कार्य करें:

घेराबंदी और सुरक्षा: तीर्थराज के चारों ओर सुरक्षा दीवार का निर्माण अति आवश्यक है।

अधिकार की रक्षा: जैन समुदाय ने कभी किसी अन्य की भूमि पर अवैध अधिकार नहीं किया, तो हमारे सिद्ध क्षेत्रों पर अनैतिक हस्तक्षेप क्यों?

शासकीय घोषणा: सम्मेद शिखरजी को 'पर्यटन स्थल' नहीं, बल्कि 'जैन तीर्थ' घोषित किया जाना चाहिए ताकि इसकी ऐतिहासिकता, पावनता और प्रमाणिकता बनी रहे।

आह्वान: एकजुट हो समाज

मैं पारस जैन 'पार्श्वमणि', हृदय की असीम गहराइयों से समस्त जैन संस्थाओं, तीर्थ क्षेत्र समितियों और समाज के प्रतिनिधियों से आत्मीय निवेदन करता हूँ कि वे इस विषय को सर्वोच्च प्राथमिकता दें। यह वर्तमान समय की सबसे बड़ी चुनौती है। शासन-प्रशासन की भी यह जिम्मेदारी है कि वह इस अनमोल धरोहर की सुरक्षा सुनिश्चित करे।

आइए, हम सब मिलकर अपने तीर्थों की पावनता को अक्षुण्ण बनाए रखने का संकल्प लें।

खंडेलवाल वैश्य महासभा ने धूमधाम से मनाया 77वां गणतंत्र दिवस

जयपुर. शाबाश इंडिया

अखिल भारतीय खंडेलवाल वैश्य महासभा द्वारा 77वां गणतंत्र दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महासभा के शास्त्री नगर स्थित 'खंडेलवाल भवन' पर हुआ, जहाँ अध्यक्ष रमेश चन्द्र गुप्ता (तूँगा वाले) ने मुख्य अतिथि के रूप में ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर अध्यक्ष रमेश चन्द्र गुप्ता ने भारतीय संविधान के गौरवशाली इतिहास पर प्रकाश डालते हुए समाज बंधुओं से राष्ट्र प्रेम और एकता का आह्वान किया। समारोह में महासभा के मुख्य कार्यकारी अध्यक्ष संजीव कट्टा, पत्रिका के प्रधान संपादक राम निरंजन खुटेटा और राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रो. रमेश कुमार रावत सहित कई वरिष्ठ पदाधिकारी उपस्थित रहे। समारोह के दौरान राष्ट्रीय युवा संयोजक शरद फरसोइया, भवन संयोजक रमेश चंद खंडेलवाल और सुमधुरा सखी सहेली मंच की संयोजक मधु खंडेलवाल सहित राजस्थान, हरियाणा, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात जैसे विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त दिल्ली, कोलकाता, हैदराबाद और अहमदाबाद जैसे प्रमुख शहरों के आजीवन सदस्यों व कार्यकर्ताओं ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और समाज को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं प्रेषित कीं। यह आयोजन सामाजिक एकजुटता और देशभक्ति के संकल्प के साथ संपन्न हुआ।

जैन साध्वी सुयोग्यनंदिनी माताजी को राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार से सम्मानित

मुरैना/राजाखेड़ा (मनोज जैन नायक)

जैन साध्वी, युग प्रवर्तक गणिनी आर्यिका श्रेष्ठ श्री सुयोग्यनंदिनी माताजी को राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार से सम्मानित किया गया। विगत दिवस जयपुर में आयोजित एक गरिमामय समारोह में सैकड़ों उपस्थित जनों के समक्ष प्रसिद्ध जैन साध्वी गणिनी आर्यिका श्रेष्ठ श्री सौम्यनंदिनी माताजी की प्रथम परम प्रभावक शिष्या, मनियां नगर गौरव एवं जिनवाणी पुत्री गणिनी आर्यिका श्रेष्ठ श्री सुयोग्यनंदिनी माताजी को यह सम्मान प्रदान किया गया। पूज्य माताजी की आज्ञा अनुसार राजाखेड़ा निवासी रवि कुमार जैन 'आदित्य' ने समारोह में उपस्थित होकर यह पुरस्कार ग्रहण किया। पूज्य गुरुमां के परम भक्त रवि जैन ने बताया कि गणिनी आर्यिका श्री सुयोग्यनंदिनी माताजी का जन्म राजाखेड़ा के निकटवर्ती मनियां नगर में हुआ। मात्र 5 वर्ष की आयु में स्वाध्याय प्रारंभ, 7 वर्ष की आयु में ब्रह्मचर्य नियम, 13 वर्ष की आयु में गृहत्याग, 17 वर्ष की आयु में आर्यिका दीक्षा तथा केवल 26 वर्ष की अल्पायु में सर्वोच्च गणिनी पद प्राप्त करने का गौरव पूज्य माताजी के नाम दर्ज है। वर्तमान में पूज्य माताजी युवा पीढ़ी की प्रेरणास्रोत हैं तथा 'मोटिवेशनल साध्वी' के रूप में देशभर में सुविख्यात हैं। इन्हीं उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए आर्मी द्वारा संचालित एवं भारत सरकार से मान्यता प्राप्त वाई.एस.एस. ग्रुप द्वारा आयोजित कार्यक्रम में वायुसेना कैप्टन आर.सी. त्रिपाठी एवं कैप्टन मुकेश कुमार द्वारा उन्हें राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार प्रदान किया गया। इस अवसर पर प्रशस्ति पत्र, गोल्ड मेडल एवं प्रतीक चिन्ह भी प्रदान किए गए। उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व भी पूज्य माताजी को अनेक उपाधियों से विभूषित किया जा चुका है, जिनमें युग प्रवर्तक, जिनवाणी पुत्री एवं आगम शिरोमणि प्रमुख हैं। पूज्य माताजी को राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार प्राप्त होने पर राजाखेड़ा, मनियां, धौलपुर सहित संपूर्ण जैन समाज में हर्ष एवं उल्लास का वातावरण है।

मिथ्यात्वः स्वरूप, भ्रांतियां और फल

श्रीमती चंदा सेठी (दुर्गापुरा, जयपुर)

संसार में जीव के परिभ्रमण और दुखों का सबसे बड़ा कारण 'मिथ्यात्व' है। मिथ्यात्व वह विपरीत मान्यता है, जिसके कारण जीव अपने निज स्वरूप को नहीं पहचान पा रहा है। पंडित टोडरमल जी ने 'मोक्ष मार्ग प्रकाशक' में सत्य ही कहा है– ₹मिथ्या दर्शनादिक करी जीव के स्वरूप-विवेक नहीं हो सके हैं।₹ अर्थात मिथ्यात्व के रहते जीव को अपने और पर के भेद का ज्ञान नहीं हो पाता।

मिथ्यात्व के चार प्रमुख रूपः

1. देह और आत्मा को एक माननाः जीव शरीर की उत्पत्ति को अपनी उत्पत्ति और शरीर के विनाश को अपना मरण मानता है। ₹मैं मनुष्य हूँ, स्त्री हूँ, राजा हूँ, काला या गोरा हूँ₹–यह मानना ही सबसे बड़ा मिथ्या विकल्प है। जीव यह भूल जाता है कि शरीर जड़ है और वह स्वयं चैतन्य।

2. बाह्य पदार्थों में अपनत्व (ममत्व)ः मेरा घर, मेरा धन, मेरा परिवार–यह बाहरी वस्तुएं कभी आत्मा की नहीं हो सकतीं। जो साथ छोड़ दे, वह 'मेरा' कैसे? मेरा तो केवल मेरा 'ज्ञान-स्वभावी आत्मा' है, जो कभी मेरा साथ नहीं छोड़ता।

3. कर्तृत्व का अहंकार (मैं करने वाला हूँ)ः जीव सोचता है कि ''मैं नहीं करूँ तो सब भूखे मर जाएंगे।'' यह मिथ्या धारणा है। प्रत्येक जीव अपने कर्मानुसार सुख-दुख पाता है।

उदाहरणः जीवंधर स्वामी श्मशान में पैदा हुए, पर पुण्य योग से गंधोत्कट सेठ ने उन्हें पाला। मैनासुंदर का विवाह कोढ़ी (श्रीपाल) से हुआ, फिर भी पुण्य के प्रभाव से रोग कट गए। स्पष्ट है कि जीव केवल अपने भावों का कर्ता है, पर-पदार्थों का कुछ नहीं कर सकता।

4. भोक्तृत्व की भ्रांतिः जीव मानता है कि वह धन, स्त्री और राज्य का भोक्ता है। वास्तव में, वह जड़ पदार्थों का नहीं, बल्कि अपनी कल्पित मान्यताओं का भोक्ता है। वह अनहोनी को होनी बनाना चाहता है और फलस्वरूप क्लेश भोगता है।

मिथ्यात्व का घातक प्रभाव

जैसे पित्त ज्वर (पीलिया) के रोगी को मीठा भोजन भी कड़वा लगता है, वैसे ही मिथ्यात्वी जीव को ज्ञान और वैराग्य दुखदायी लगते हैं। मोह, राग, द्वेष और कषायों में ही उसे सुख प्रतीत होता है।

मधुबिंदु का दृष्टांतः जिस प्रकार वट वृक्ष की जटा पकड़कर लटका हुआ मनुष्य, नीचे मगरमच्छ और ऊपर हाथियों द्वारा जड़ें उखाड़े जाने के बावजूद, शहद की एक बूंद के लालच में पड़कर विद्याधर की सहायता ठुकरा देता है और विमान में नहीं बैठता; ठीक उसी प्रकार मिथ्यात्वी जीव विषय-वासनाओं के क्षणिक सुख में फंसकर देव-शास्त्र-गुरु की देशना की उपेक्षा करता है।

''इतना काम कर लूँ,
उतना काम कर लूँ''

इसी रस में लीन रहते हुए शुद्ध आत्मा की प्रतीति का समय नहीं मिल पाता और अचानक मृत्यु आ पहुँचती है। अंततः जीव अपना सब कुछ हारकर चला जाता है। अतः बुद्धिमान जीव को चाहिए कि वह शरीर, स्पर्श, रस, गंध और वर्ण जैसे पर-स्वभावों से हटकर अपनी आत्मा, जो कि 'ज्ञान-दर्शन' स्वभावी है, उसी में रमे। मिथ्यात्व का त्याग और सम्यक दर्शन का उदय ही मोक्ष का मार्ग है।

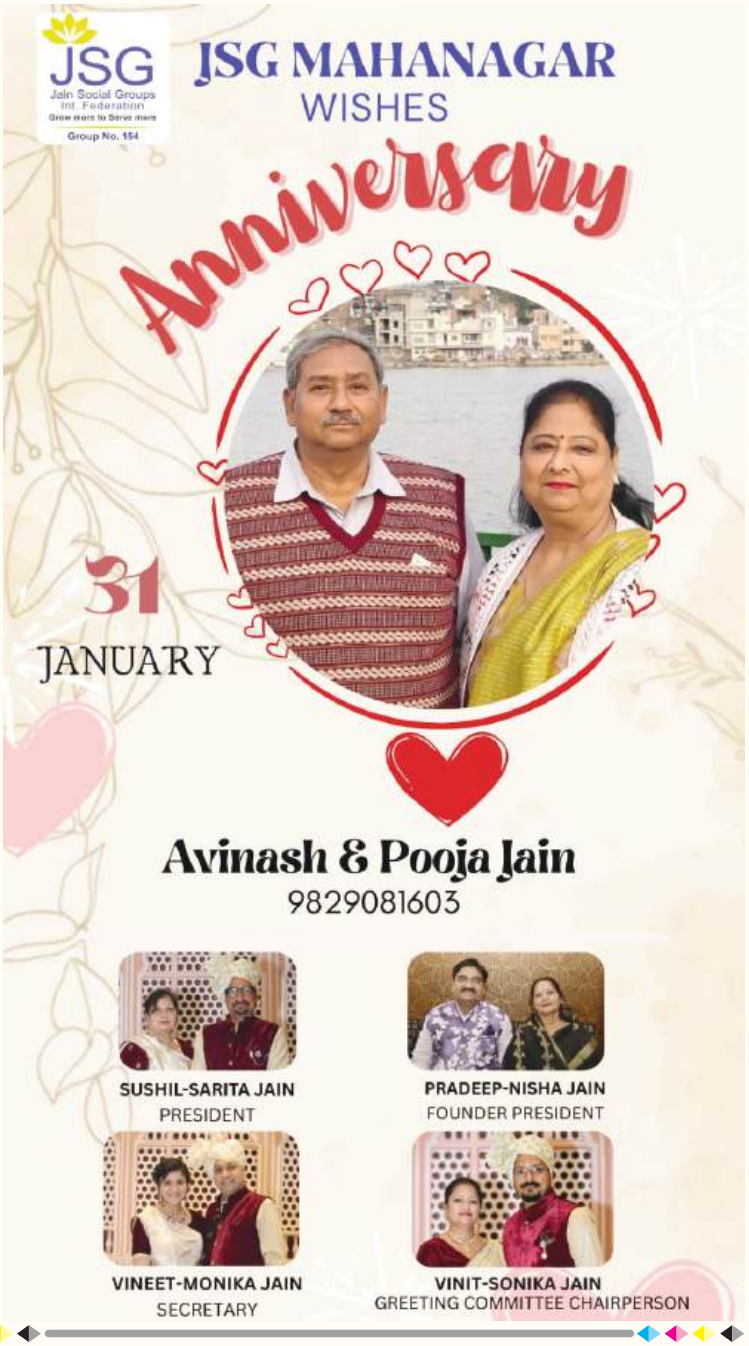

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com | weeklyshabaas@gmail.com

।। श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः।।

पद्मपुरा

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

दिनांक 18 से 22 फरवरी 2026

श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा नवनिर्मित खड्गासन चौबीसी

एवं

पद्मबल्लभ शिखर कलश - ध्वजारोहण महामहोत्सव

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र
पद्मपुरा (बाड़ा) जयपुर, राजस्थान

: पावन सान्निध्य :
वात्सल्य वारिधि
पंचम पट्टाचार्य 108 श्री वर्धमानसागर जी महाराज
ससंघ

: पावन सान्निध्य :
वात्सल्य वारिधि पंचम पट्टाचार्य 108 श्री वर्धमानसागर जी महाराज ससंघ

: पावन प्रेरणा :
गणिनी आर्यिका 105 श्री स्वस्तिभूषण माताजी ससंघ

प्रतिष्ठाचार्य : पं. हँसमुख जी जैन (धरियावद) राज.

: पावन प्रेरणा :
गणिनी आर्यिका
105 श्री स्वस्ति भूषण माताजी
ससंघ

पधारो पद्मपुरा बाड़ा,

जहां धर्म की ज्योति प्रज्ज्वलित होती है

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में इन्द्र एवं अन्य पात्र बनने के लिए सम्पर्क करें।

| सुधीर कुमार जैन 'एडवोकेट' 94140 50432 | हेमन्त सौगानी 'एडवोकेट' 98290 64506 | राजकुमार कोठ्यारी 94140 48432 |

निवेदक

पद्मपुरा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति

अन्तर्गत : प्रबन्ध समिति, श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा (बाड़ा), जयपुर, राजस्थान

सकल दिगम्बर जैन समाज पद्मपुरा एवं जयपुर (राजस्थान)

महोत्सव कार्यालय : एच-24, चितरंजन मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर 302 001 | मोबाईल नम्बर : 94140 48432, 98290 64506
क्षेत्रीय कार्यालय : बाड़ा पदमपुरा जयपुर 303 903 | मोबाईल नम्बर : 90579 03365

मंगल आशीर्वाद- परम पूज्य सिंहरथ प्रवर्तक त्रिलोकतीर्थ प्रणेता आचार्यश्री
108 विद्याभूषण सन्मतिसागरजी महाराज
पंचकल्याणक
प्रतिष्ठा महोत्सव
के निमित्त पदमपुरा की पुण्य धरती पर
भारत गौरव, परम विदुषी लेखिका गणिनी आर्यिकारत्नश्री
105 स्वस्तिभूषण माताजी ससंघ का
भव्य मंगल प्रवेश
शुभ दिन-01 फरवरी 2026, दोपहर 02:00 बजे
भव्य जुलूस मय लवाजमा पदम ज्योति अस्पताल
शिवदासपुरा रोड पदमपुरा से प्रारम्भ होगा।
धर्मसभा दोपहर 03:30 बजे, पदमपुरा मन्दिर
-प्रबन्ध समिति-
श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा (बाड़ा)
जयपुर, राजस्थान
आप भी सहपरिवार इस पावन अवसर पर सहभागिता कर पुण्यलाभ अर्जित करें

जो प्राप्त है वही पर्याप्त है: मुनि प्रज्ञान सागर

टोंक. शाबाश इंडिया

दिगंबर जैन मुनि प्रज्ञान सागर महाराज एवं मुनि प्रसिद्ध सागर महाराज का शुक्रवार को पुरानी टोंक में गाजे-बाजे के साथ भव्य मंगल प्रवेश हुआ। मुनि संघ के सानिध्य में समूचा शहर भक्ति और उत्साह के रंग में डूबा नजर आया।

भव्य शोभायात्रा और अगवानी

राजेश अरिहंत ने बताया कि मुनि संघ ने आदर्श नगर जैन मंदिर से विहार कर अमीरगंज जैन नसिया में भगवान आदिनाथ के दर्शन किए। इसके पश्चात नसिया जी से भव्य जुलूस शुरू हुआ। श्रद्धालु हाथों में केसरिया ध्वज लिए बैंड-बाजों की धुन पर नृत्य करते हुए चल रहे थे। मार्ग में श्रद्धालुओं ने पुष्प वर्षा कर मुनि संघ की अगवानी की। लोगों ने घरों के बाहर रंगोलियाँ बनाईं और मुनि श्री के पाद प्रक्षालन कर आरती उतारी। बाबरों का चौक स्थित चंद्रप्रभु चैत्यालय पर महिला मंडल ने सिर पर

मंगल कलश धारण कर गुरुवर का स्वागत किया।

धर्मसभा: 'नर से नारायण' बनने का मार्ग

पुरानी टोंक के नवीन पार्श्वनाथ जिनालय में भगवान के अभिषेक और शांतिधारा के पश्चात आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि प्रज्ञान सागर जी ने कहा कि प्रत्येक आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति है। उन्होंने प्रवचन के मुख्य बिंदुओं पर प्रकाश डाला:

स्वाध्याय की महिमा: शास्त्र पढ़ने से ज्यादा जरूरी स्वयं का चिंतन है। यदि मानव को स्वाध्याय का मर्म समझ आ जाए, तो आपसी भेदभाव स्वतः समाप्त हो जाएगा।

सकारात्मक सोच: दूसरों की उन्नति देखकर ईर्ष्या करने के बजाय स्वयं को ऊपर उठाने का पुरुषार्थ करना चाहिए। पुरुषार्थ के बिना लक्ष्य की प्राप्ति संभव नहीं है।

संतोष का भाव: आज का मानव थोड़े से कष्ट में विचलित हो जाता है। हमें सरल और संयमित होकर यह भावना रखनी चाहिए कि ''जो प्राप्त है, वही पर्याप्त है।''

दान और भोग: मुनि श्री ने कहा कि आपके पास जो धन-संपदा है, उसका सदुपयोग दान या भोग में करें, अन्यथा उसका नाश निश्चित है।

संध्याकालीन धार्मिक आयोजन

पदम कासलीवाल ने बताया कि सायंकाल भगवान पार्श्वनाथ की 21 दीपकों से महाआरती की गई। इसके पश्चात मुनि संघ के सानिध्य में 'आनंद यात्रा' कार्यक्रम हुआ, जिसमें मुनि श्री ने रोचक कहानियों और प्रश्नोत्तरी के माध्यम से श्रावकों को धर्म के गूढ़ रहस्यों से अवगत कराया। कार्यक्रम के दौरान समाज के अध्यक्ष शैलेंद्र चौधरी सहित बड़ी संख्या में जैन समाज के पदाधिकारी और श्रद्धालु उपस्थित रहे।

जीतो बिजनेस नेटवर्क से सशक्त होंगी महिलाएँ, आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ाया कदम

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। महिलाओं को आपसी सहयोग, व्यावसायिक नेटवर्किंग और आर्थिक अवसरों से जोड़कर आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से जीतो लेडीज विंग भीलवाड़ा द्वारा एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। शुक्रवार को सुखाड़िया सर्किल स्थित जीतो हाउस पर आयोजित इस कार्यक्रम का विषय 'सूत्र-कनेक्टिंग वुमन, क्रिएटिंग स्ट्रेंथ' रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए लेडीज विंग की चेयरपर्सन नीता बाबेल ने कहा कि संगठित नेटवर्क के माध्यम से महिलाएँ न केवल सामाजिक रूप से, बल्कि आर्थिक रूप से भी नेतृत्व करने में सक्षम हैं। उन्होंने सदस्यता के लाभ और महिलाओं के बीच आपसी जुड़ाव को सशक्त करने पर बल दिया। चीफ सेक्रेटरी अर्चना पटौदी ने बताया कि आयोजन के दौरान रितिका पाटनी, श्वेता जैन और निकिता जैन सहित कई नई सदस्याओं का आत्मीय स्वागत किया गया। कार्यक्रम में शिल्पा रांका, अमित कुमार जैन और राहुल छाबड़ा ने जीतो बिजनेस नेटवर्क के रेफरल सिस्टम और कार्यप्रणाली की विस्तृत जानकारी साझा की। उन्होंने बताया कि कैसे जेबीएन के माध्यम से जैन महिलाओं को नए व्यापारिक अवसर उपलब्ध कराकर उन्हें स्वावलंबी बनाया जा सकता है। इस अवसर पर नीतू चोरड़िया, अमिता बाबेल, दीप्ति अजमेरा और रजनी सिंघवी सहित बड़ी संख्या में विंग की पदाधिकारी एवं सदस्याएँ उपस्थित रहीं। इस सदस्यता विस्तार कार्यक्रम ने महिलाओं के सतत विकास और आर्थिक मजबूती के लिए एक साझा दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

फागी कस्बे सहित परिक्षेत्र के जिनालयों में अभिनंदननाथ एवं धर्मनाथ भगवान के जन्म एवं तप कल्याणक महोत्सव हर्षोल्लासपूर्वक मनाए गए

फागी. शाबाश इंडिया

फागी कस्बे सहित परिक्षेत्र के चकवाड़ा, चोरू, नारेड़ा, मंडावरी, मेहंदवास, निमेड़ा, लसाड़िया एवं लदाना सहित विभिन्न गांवों के जिनालयों में जैन धर्म के चतुर्थ तीर्थंकर देवाधिदेव श्री अभिनंदननाथ भगवान के जन्म एवं तप कल्याणक महोत्सव तथा पंद्रहवें तीर्थंकर श्री धर्मनाथ भगवान के जन्म एवं तप कल्याणक महोत्सव श्रद्धा व हर्षोल्लास के साथ मनाए गए। कार्यक्रम के संबंध में जैन महासभा के प्रतिनिधि राजाबाबू गोधा ने अवगत कराया कि कस्बे के चंद्रपुरी जिनालय में प्रातःकाल श्रीजी का अभिषेक किया गया। इसके पश्चात सामूहिक रूप से शांतिधारा कर अष्टद्रव्यों से पूजा-अर्चना की गई।

तत्पश्चात जैन धर्म के चतुर्थ तीर्थंकर श्री अभिनंदननाथ भगवान एवं पंद्रहवें तीर्थंकर श्री धर्मनाथ भगवान के जन्म एवं तप कल्याणक के अवसर पर जयकारों के साथ सामूहिक रूप से अर्घ्य अर्पित कर सुख-समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की गई। कार्यक्रम में समाज की मैना झंडा एवं मैना नला ने संयुक्त रूप से बताया कि श्री अभिनंदननाथ भगवान का जन्म अयोध्या नगरी में इक्ष्वाकु वंश के राजा संवर एवं माता सिद्धार्था के यहां हुआ था। उनका प्रतीक चिह्न बंदर है। गंधर्व नगर के विनाश को देखकर उन्हें संसार से वैराग्य उत्पन्न हुआ, जिसके पश्चात उन्होंने दीक्षा ग्रहण कर धर्म प्रचार किया। इसी क्रम में समाज की संतरा बजाज एवं रेखा गंगवाल ने भगवान श्री धर्मनाथ के जीवन प्रसंगों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उनका जन्म रत्नपुरी के राजा भानु एवं रानी सुव्रता के यहां हुआ था। उनका प्रतीक चिह्न वज्र है। उन्होंने दीर्घकाल तक धर्म का शासन किया एवं शाश्वत तीर्थ सम्मेद शिखर पर निर्वाण प्राप्त किया। कार्यक्रम में चंद्रपुरी समाज के संरक्षक चंपालाल जैन, मंदिर समिति के अध्यक्ष सत्येंद्र कुमार झंडा, सुरेश गंगवाल, बाबूलाल पहाड़िया, सुनील गंगवाल, अशोक नला, पवन गंगवाल, सुनील बजाज, विनोद नला, नरेंद्र झंडा, टिंकू झंडा, राजाबाबू गोधा सहित महिला मंडल से गीता नला, संतरा बजाज, मैना झंडा, मैना नला, रेखा गंगवाल, बरखा पहाड़िया एवं शोभा पहाड़िया सहित सभी श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहीं।

राजाबाबू गोधा: जैन महासभा, मीडिया प्रवक्ता (राजस्थान)

शरीर के प्रति निर्ममत्व का उदाहरण है 'केश लोचन': आचार्य वर्धमान सागर

निवाई. शाबाश इंडिया

समाचार सेवा सकल दिगंबर जैन समाज के तत्वावधान में नसियां जैन मंदिर स्थित संत निवास पर आयोजित शताब्दी वर्ष महोत्सव के अंतर्गत शुक्रवार को आध्यात्मिक उत्साह का वातावरण रहा। पंचम पट्टाधीश आचार्य वर्धमान सागर महाराज के मंगल सान्निध्य में मुनि दर्शित सागर महाराज ने भक्ति भाव के साथ अपने 'केश लोचन' संपन्न किए।

केश लोचन: वैराग्य की अनूठी साधना

मीडिया प्रभारी विमल जौला और राकेश संधी ने बताया कि मुनि श्री दर्शित सागर जी ने णमोकार महामंत्र के जाप के साथ अपने हाथों से सिर और दाढ़ी-मूंछ के बालों का उत्खातन (उखाड़ना) किया। इस कठिन तपस्या के दौरान उपस्थित श्रद्धालुओं ने आदिनाथ, पद्मप्रभु, चंद्रप्रभु, पार्श्वनाथ और महावीर चालीसा का पाठ कर भक्ति का प्रदर्शन किया।

आचार्य श्री का संबोधन: इन्द्रिय विजय ही दिगंबरत्व है

इस अवसर पर धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज ने कहा कि दिगंबर साधु वही बन सकता है जिसके मन में निर्ममत्व भाव जागृत हो। उन्होंने कहा:

परिग्रह का त्याग: जो अंतरंग और बहिरंग दोनों प्रकार के परिग्रहों (माया, मोह और संपत्ति) से रहित होता है, वही नग्नत्व धारण करने में समर्थ होता है।

इन्द्रिय विजय: जिसने वासनाओं पर विजय प्राप्त नहीं की, वह दिगंबर होकर विचरण नहीं कर सकता। मुनिराजों की इन्द्रिय विजय ही उनकी साधना का प्रतिफल है।

28 मूलगुण: दिगंबर साधु ज्ञान-ध्यान में लीन रहकर अपने 28 मूलगुणों का कठोरता से पालन करते हैं, जिनमें से 'केश लोचन' भी एक अनिवार्य मूलगुण है।

अद्वितीय दर्शन: अपने ही हाथों से बालों को

उखाड़ना शरीर के प्रति उपेक्षा और वैराग्य का अनूठा उदाहरण है। दिगंबर धर्म के अतिरिक्त विश्व के किसी अन्य दर्शन में ऐसी कठोर साधना का उल्लेख नहीं मिलता।

गणमान्य जनों की उपस्थिति

कार्यक्रम के दौरान नगरपालिका उपाध्यक्ष जितेंद्र चंवरिया, गजेंद्र चंवरिया, प्रकाश पराणा, हुकमचंद जैन, सुरेंद्र माधोराजपुरा, मनोज पाटनी और सकल दिगंबर जैन समाज के अनेक पदाधिकारी व गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। समाज के सदस्यों ने मुनि श्री के इस कठिन तप की मुक्तकंठ से सराहना की और मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

भारतीय जैन मिलन क्षेत्र-10 की कोर कमेटी बैठक संपन्न

14 फरवरी को सागर में होगा क्षेत्रीय सम्मेलन

सागर. शाबाश इंडिया। समाचार सेवा भारतीय जैन मिलन क्षेत्र संख्या 10 की छठवीं कोर कमेटी की बैठक होटल मैजिक प्लाजा, सागर में गरिमापूर्ण वातावरण में संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता क्षेत्रीय अध्यक्ष अरुण चंदेरिया ने की, जबकि वरिष्ठ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष कमलेंद्र जैन एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष इंजीनियर आर.के. जैन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

शाखाओं के रिपोर्ट का अवलोकन और चयन

बैठक के दौरान विभिन्न शाखाओं से प्राप्त वार्षिक प्रगति रिपोर्ट का सूक्ष्मता से अवलोकन किया गया। इस आधार पर उत्कृष्ट कार्य करने वाली 'सर्वश्रेष्ठ' और 'श्रेष्ठ' शाखाओं का चयन किया गया, जिन्हें आगामी अधिवेशन में सम्मानित किया जाएगा।

14 फरवरी को भव्य अधिवेशन

कमेटी ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि वर्ष 2025-26 का वार्षिक अधिवेशन 14 फरवरी 2026 (शनिवार) को पद्माकर सभागार, सागर में आयोजित किया जाएगा। इस आयोजन की मेजबानी जैन मिलन नगर, सागर एवं महिला जैन मिलन मुख्य शाखा, कटरा को सौंपी गई है। क्षेत्रीय अधिवेशन में राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेश जैन 'रितुराज' सहित सभी केंद्रीय निर्वाचित पदाधिकारियों को आमंत्रित किया जाएगा। बैठक में कार्यकारी अध्यक्ष संजय जैन 'शक्कर', जिनेश जैन (बहरोल), क्षेत्रीय मंत्री कविता जैन (दमोह), क्षेत्रीय कोषाध्यक्ष प्रमोद जैन 'भाईजी', उपाध्यक्ष दिलेश चौधरी, मंजू सतभैया, मनीष विद्यार्थी, मुख्य संयोजक सुधीर जैन 'डब्बू' एवं अर्चना लिवाज (दमोह) सहित कई पदाधिकारी उपस्थित रहे।

पुलिस आपकी सुरक्षा के लिए समर्पित

साइबर धोखाधड़ी का आभास होते ही तुरंत करें सूचित: सुनीता मीणा (अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक)

जयपुर. शाबाश इंडिया। समाचार सेवा महावीर इंटरनेशनल की 'ई-चौपाल' के माध्यम से महिला सशक्तिकरण और साइबर जागरूकता पर एक विशेष सत्र का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में जयपुर की अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (सामुदायिक पुलिसिंग) श्रीमती सुनीता मीणा ने शिरकत की। सुनीता मीणा, जो अब तक १४ लाख से अधिक बालिकाओं को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण दिला चुकी हैं, ने महिलाओं को निडर होकर पुलिस का सहयोग करने का आह्वान किया। उन्होंने साइबर अपराधों से बचने के लिए सतर्कता को अनिवार्य बताया और कहा कि किसी भी प्रकार की धोखाधड़ी का आभास होते ही तुरंत पुलिस को सूचित करना चाहिए। महत्वपूर्ण सहायता नंबर साझा किए: सत्र के दौरान उन्होंने सुरक्षा के लिए जरूरी नंबरों की जानकारी दी:

१००/११२: आपातकालीन पुलिस सहायता

१०९०: महिला सशक्तिकरण और सुरक्षा (गरिमा सहायता केंद्र)

१९३०: साइबर अपराध और वरिष्ठ नागरिक सुरक्षा

सुनीता मीणा ने 'शून्य प्रथम सूचना रिपोर्ट' (जीरो एफआईआर) की अवधारणा स्पष्ट करते हुए कहा कि राजस्थान पुलिस अपराधियों के विरुद्ध पूरी तरह मुस्तैद है। उन्होंने प्रतिभागियों को अपना व्यक्तिगत नंबर (९४१३९०९९०९) साझा करते हुए विश्वास दिलाया कि वे किसी भी समय सहायता के लिए संपर्क कर सकते हैं। कार्यक्रम का संचालन ई-चौपाल के अंतर्राष्ट्रीय निदेशक अजीत कोठिया ने किया। अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल जैन ने भी सभा को संबोधित किया, जबकि महेश मूंड ने आभार व्यक्त किया।

खीचा परिवार ने प्रवेश द्वार व खेल सामग्री की घोषणा

शिवगंज. शाबाश इंडिया। महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय, शिवगंज में भामाशाह सेठ हरकचंद रूपचंद खीचा फाउंडेशन द्वारा 26 जनवरी 2026 को विद्यालय के प्रवेश द्वार को चौड़ा एवं नवीन रूप में बनाने तथा खेलकूद हेतु खिलाड़ियों के लिए ट्रैक सूट एवं मल्लखंभ उपलब्ध कराने की घोषणा की गई। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ भामाशाह खीचा परिवार का आभार व्यक्त किया। शिक्षक एवं साहित्यकार गुरुदीन वर्मा के अनुसार, शारीरिक शिक्षक धर्मेंद्र गहलोत ने बताया कि भामाशाह खीचा परिवार के सदस्यों अशोक खीचा, हुकमीचंद खीचा, ललित खीचा, भरत खीचा एवं पुनीत खीचा की उपस्थिति में प्रवेश द्वार को अधिक बड़ा एवं चौड़ा करने के निर्माण कार्य को 1 फरवरी से प्रारंभ करने पर सहमति बनी। साथ ही इसी सत्र में खेलकूद हेतु आवश्यक सामग्री क्रय कर विद्यालय प्रशासन को उपलब्ध कराई जाएगी। इस घोषणा पर विद्यालय स्टाफ ने भामाशाह परिवार का धन्यवाद ज्ञापित किया। उल्लेखनीय है कि खीचा परिवार द्वारा अब तक इस विद्यालय में लगभग 2 करोड़ रुपये से अधिक के अनुमानित विकास कार्य कराए जा चुके हैं। विद्यालय के निरंतर विकास हेतु उनका सहयोग एवं आश्वासन अत्यंत सराहनीय है।

आध्यात्मिक ऊर्जा से महका कलाकुंज

उपाध्याय श्री विहसंत सागर जी का मंगल प्रवेश, भक्तामर विधान संपन्न

आगरा. शाबाश इंडिया

'मेडिटेशन गुरु' के रूप में विख्यात उपाध्याय श्री विहसंत सागर जी महाराज ससंघ का शुक्रवार, 30 जनवरी को कलाकुंज, मारुति स्टेट स्थित श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। कड़ाके की ठंड के बावजूद गुरुदेव के दर्शनों के लिए श्रद्धालुओं का हुजूम उमड़ पड़ा।

भव्य अगवानी और भक्तिमय वातावरण

गुरुदेव ने प्रातः ओल्ड ईदगाह जैन मंदिर से मंगल विहार किया। कलाकुंज पहुँचने पर स्थानीय जैन समाज ने पलक-पावड़े बिछाकर मुनि संघ की अगवानी की। मंगल प्रवेश के पश्चात मंदिर समिति के तत्वावधान में 'श्री भक्तामर महामंडल विधान' का आयोजन किया गया। मंत्रोच्चारण और दीप प्रज्वलन के बीच भक्तों ने भगवान आदिनाथ की भावपूर्ण आराधना की और प्रभु के चरणों में अर्घ्य समर्पित किए।

प्रवचनः संयम और साधना से ही आत्मकल्याण

धर्मसभा को संबोधित करते हुए उपाध्याय श्री ने कहा कि संयम और साधना ही आत्मकल्याण का एकमात्र मार्ग है। उन्होंने प्रेरणा देते हुए कहा कि धार्मिक अनुष्ठानों से केवल पुण्य का संचय ही नहीं होता, बल्कि इनसे मन की शुद्धि होती है और जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। कलाकुंज समाज के पदाधिकारियों ने गुरुदेव को श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

अवधपुरी की ओर विहार

सायंकाल उपाध्याय श्री ससंघ ने कलाकुंज से अवधपुरी जैन मंदिर की ओर प्रस्थान किया। इस दौरान रविंद्र जैन, आदित्य भगत, मुकेश भगत, मनोज जैन, अजय जैन, पंडित अंकित जैन, दीपचंद जैन और समस्त मंदिर समिति के पदाधिकारी सहित बड़ी संख्या में महिलाएँ एवं युवा उपस्थित रहे।

पत्रकार एवं समाज सेवी

रोहित जैन बडजात्या

को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं

शुभेच्छु

चंचल देवी, नवीन विनीता, कमल मधु, राकेश सरोज, मनीष नीरज ,नवीन मीनाक्षी, राहुल मोनिका, कीर्ति, वैभव ,अर्वित, विविधा नेहल, कीर्तिका, आदित्य, हार्दिक, गहना, इशिता ,मानवी, अनिका, दविश, दक्ष, दीक्षा, (ईशान सत्यार्थ), एवं समस्त बडजात्या परिवार नसीराबाद, जतन जी पंसारी, (जैन टिफिन सेन्टर) राहुल जैन 9413135797)

(ब्यूरो चीफ अहिंसा क्रांति समाचार पत्र) (सुरभि सलोनी समाचार पत्र)(शाबाश इंडिया समाचार पत्र) (अनोखी पत्रिका समाचार पत्र) (सेवा समाचार पत्र)(न्यूज 24 एक्सप्रेस समाचार पत्र एवं चैनल) रोहित जैन(8575455555) नसीराबाद

समाजसेवी सुरेंद्र कुमार जैन 'राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार 2026' से सम्मानित

जयपुर. शाबाश इंडिया

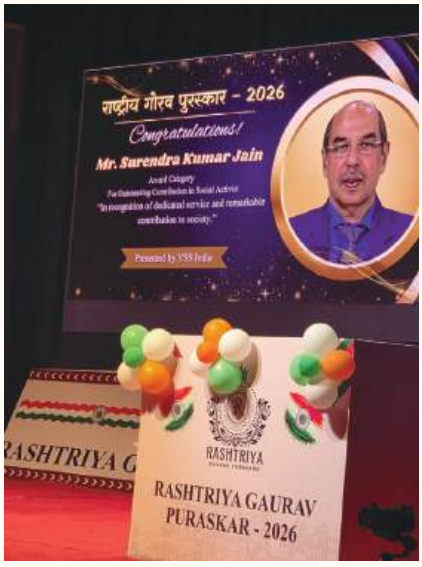

27 जनवरी गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर जयपुर में आयोजित भव्य 'राष्ट्रीय गौरव सम्मान समारोह' में स्थानीय समाजसेवी एवं महावीर नगर निवासी श्री सुरेंद्र कुमार जैन को 'राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार 2026' से नवाजा गया। उन्हें यह सम्मान सामाजिक गतिविधियों, जन कल्याण और मानव सेवा के क्षेत्र में उनके विशिष्ट एवं उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किया गया है।

निस्वार्थ सेवा और समर्पण का प्रतिफल

गौरतलब है कि सुरेंद्र कुमार जैन विगत कई वर्षों से समाज सेवा के विभिन्न प्रकल्पों में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। वे विशेष रूप से जरूरतमंदों की सहायता, सामाजिक जागरूकता अभियानों और मानवीय मूल्यों के संवर्धन के लिए निरंतर प्रयासरत रहे हैं। चयन समिति ने उनके द्वारा सामुदायिक सहयोग को बढ़ावा देने और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को मजबूत करने के प्रयासों को सराहा है।

सकारात्मक परिवर्तन ही मुख्य उद्देश्य

सम्मान प्राप्त करने के उपरांत श्री जैन ने अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि समाज का वास्तविक विकास तभी संभव है जब प्रत्येक नागरिक अपनी जिम्मेदारी को समझे और मानव कल्याण के लिए निस्वार्थ भाव से आगे आए। उनकी इसी संवेदनशील सोच और सहयोगात्मक दृष्टिकोण ने उन्हें क्षेत्र में एक विश्वसनीय सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में स्थापित किया है। समारोह के दौरान गणमान्य अतिथियों ने उनके सेवा समर्पण और जनहित के प्रति अटूट प्रतिबद्धता की प्रशंसा की। समाज के विभिन्न वर्गों और संस्थाओं ने भी उन्हें इस प्रतिष्ठित उपलब्धि पर बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित की हैं।

जयपुर में संतों का महासंगम

तीन जैन संघों के 48 साधुओं का हुआ भव्य मिलन

जयपुर. शाबाश इंडिया। शिप्रा पथ, मानसरोवर स्थित वीटी रोड ग्राउंड पर चल रहे आठ दिवसीय 'भगवत जिनेन्द्र महा अर्चना महोत्सव' में शुक्रवार को एक ऐतिहासिक दृश्य देखने को मिला। यहाँ अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागर महाराज, आचार्य सुंदर सागर महाराज और आचार्य शशांक सागर महाराज के तीन संघों के कुल 48 संतों का भव्य मिलन हुआ। इस 'त्रिवेणी संगम' को देखकर हजारों श्रद्धालु भाव-विभोर हो उठे और पूरा परिसर जयकारों से गुंजायमान हो गया।

पुष्पवर्षा के बीच हुआ 'भरत मिलाप'

आचार्य सुंदर सागर एवं आचार्य शशांक सागर महाराज अपने 32 पिच्छीका संघ के साथ अग्रवाल फार्म स्थित पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर से गाजे-बाजे के साथ रवाना हुए। अरावली पथ तिराहे पर उपाध्याय पीयूष सागर महाराज ने उनकी अगवानी की। जब तीनों आचार्य मंच के मुख्य द्वार पर मिले, तो उनके परस्पर आलिंगन ने 'राम-भरत मिलाप' की यादें ताजा कर दीं। इस दौरान आसमान से हुई गुलाब के फूलों की वर्षा ने समूचे पांडल को गुलाबी रंग में सराबोर कर दिया। धर्मसभा में आचार्य सुंदर सागर जी ने कहा कि हम सभी एक ही बगिया के फूल हैं, वहीं आचार्य शशांक सागर जी ने कविताओं के माध्यम से संतों के दर्शन की महिमा बताई।

मस्तिष्क में बर्फ और जुबान पर शक्कर

सभा को संबोधित करते हुए अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागर जी महाराज ने जीवन में सफलता के सूत्र प्रदान किए। उन्होंने कहा: **सफलता का आधार:** जो लोग धैर्य, विवेक और संकल्प के साथ श्रम करते हैं, वे ही सफलता के शिखर पर पहुँचते हैं। **व्यवहार कुशलता:** जीवन को सफल बनाने के लिए मस्तिष्क में 'आइस फैक्ट्री' (ठंडक) और जुबान पर 'शुगर मशीन' (मिठास) लगानी चाहिए। **दृष्टिकोण:** मन की निश्छलता और विचारों की पारदर्शिता ही आपको महान बनाती है। अर्जुन की तरह अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित रखें, मार्ग की बाधाओं (फिसलन या कांटों) से विचलित न हों।

चारित्र शुद्धि विधान: 411 अर्घ्य समर्पित

महोत्सव के तहत शुक्रवार को प्रतिष्ठाचार्य बा.ब्र. तरुण भैया के निर्देशन में 'श्री 1008 चारित्र शुद्धि महामंडल विधान' आयोजित हुआ। श्रद्धालुओं ने भक्ति भाव से मयूर पिच्छीका के साथ मंडल पर 411 अर्घ्य समर्पित किए। शनिवार, 31 जनवरी को इस विधान का समापन 'विश्व शांति महायज्ञ' की पूर्णाहुति के साथ होगा।

जयपुर में पहली बार: 'विवाह अणुव्रत संस्कार' आज

प्रवास समिति के अध्यक्ष सुभाग्य चंद जैन एवं महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि रविवार, 1 फरवरी को जयपुर में पहली बार 'विवाह अणुव्रत संस्कार महोत्सव' आयोजित होगा। इसमें 1 से 25 वर्ष तक का वैवाहिक जीवन पूर्ण करने वाले दंपतियों को संस्कारित किया जाएगा।
उद्देश्य: वैवाहिक रिश्तों में सामंजस्य, संयम और मजबूती लाना।
ड्रेस कोड: पुरुषों के लिए सफेद वस्त्र और महिलाओं के लिए केसरिया साड़ी अनिवार्य है।
समय: प्रातः 7:00 बजे से (निःशुल्क ऑनलाइन पंजीकरण अनिवार्य)।
इस अवसर पर रविवार के कार्यक्रम के पोस्टर का विमोचन किया गया। आहार चर्या के पश्चात सायंकाल 108 दीपकों से महाआरती एवं 'आनंद यात्रा' का आयोजन हुआ, जिसमें गुरुदेव ने जीवन प्रबंधन के गुर सिखाए।